अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना B.Ed. प्रथम सेम० 2022

INTERNATIONAL UNDERSTANDING

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना दो शब्दों अन्तर्राष्ट्रीय एवं सद्भावना से मिलकर बना है अतः विभिन्न राष्ट्रों के मध्य मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध एवं अच्छी भावना ही अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को व्यक्त करती है दूसरे शब्दों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना विभिन्न राष्ट्रों के मध्य अच्छी भावना से युक्त सम्बन्ध रखने का सन्देश देता है।

गोल्ड स्मिथ के अनुसार :- "अन्तर्राष्ट्रीय एक भावना है जो व्यक्ति को यह बताती है कि वह अपने राज्य का ही सदस्य नहीं है वरन् विश्व का नागरिक भी है।

डा० वाल्टर एच० सी० लेव्ज के अनुसार - अन्तर्राष्ट्रीय भावना इस ओर ध्यान दिए बिना कि व्यक्ति किस राष्ट्रीयता या संस्कृति के है एक दूसरे के प्रति सब जगह उनके व्यवहार का आलोचनात्मक और निष्पक्ष रूप से निरीक्षण करने और आँकने की योग्यता है

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना / समझ के लिए शिक्षा के उद्देश्य :-

1:- बालकों को विश्वनागरिकता के लिए तैयार किया जाए।

2:- इनमें बालक स्वतन्त्र विचार, निर्णय भाषण और लेखन की योग्यता का विकास किया जाए

3:- उन्हें विश्व समाज के निर्माण में सहायक मूल्यों आदर्शों एवं उद्देश्यों में विश्वास (आस्था) रखने की शिक्षा दी जाए।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, वाराणसी

यूनेस्को द्वारा प्रतिपादित उद्देश्य
Objective predicated by UNESCO

1:- विश्व-संस्कृति तथा विश्व नागरिकता के विकास के लिए सभी देशों की उपलब्धियों का मूल्यांकन तथा आदर करना सिखाया जाए।

2:- उन्हें विश्व में एक-साथ मिलजुलकर रहने के लिए आवश्यक बातों का ज्ञान कराया जाए।

3:- बालकों को स्वयं के सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पक्षपातों को महत्व न देने की शिक्षा प्रदान की जाए।

4:- बालकों तथा बालिकाओं को समाज के निर्माण में सक्रिय भाग लेने के लिए तत्पर किया जाए।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा की भूमिका
Role of Education at International Level

विश्व शान्ति के प्रति प्रेम :- शिक्षा का अन्तर्राष्ट्रीय उद्देश्य बालकों के अन्दर अन्तर्राष्ट्रीय समझ व सद्भाव का विकास कर सके। विश्व को युद्ध आशंका व अराजकता की परिस्थितियों से बचाना व देश में सुव्यवस्था बनाए रखना भी शिक्षा का एक दायित्व है।

विश्व नागरिकता की भावना उत्पन्न करना :- शिक्षा का एक अन्तर्राष्ट्रीय कार्य बालकों में विश्व नागरिकता की भावना का विकास करना है। भारतीय संस्कृति की परम्परा रही है कि सभी धर्मों, देशों तथा सम्पूर्ण विश्व के प्रति समभाव और एक-दूसरे से निकटता के सम्बन्ध स्थापित करना।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना समझ के विकास की आवश्यकता एवं महत्व

1- मानव जाति मूल्य एक है :- सम्पूर्ण मानव जाति एक है तथा विश्व एक इकाई है यद्यपि रूप, रंग जाति, धर्म एवं ढंग आदि के रूप में विश्व के सभी देश एक-दूसरे से भिन्न है परन्तु फिर भी सबकी मानवीय आत्मा एक है। जैसे- उदारता एवं सहानुभूति।

2 मात्र राष्ट्रीयता से मानव कल्याण असम्भव :- बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में दो महायुद्ध राष्ट्रीयता की भावना के ही परिणाम थे इन युद्धों के परिणामों से भी हम भली-भाँति परिचित है इसमें सामाजिक क्रूरता, अत्याचार, आर्थिक, मानवीय और राजनीतिक अधिकारों का हनन एवं धार्मिक स्वतन्त्रता का अत्यधिक विनाश हुआ

3- वैज्ञानिक तकनीक का विकास :- वर्तमान समय में विज्ञान के विकास एवं आविष्कारों ने विश्व के भिन्न 2 देशों की पृथकता का अन्त कर दिया है यातायात के साधनों, तार, रेडियो टेलीविजन एवं फोन आदि के आविष्कारों के कारण संसार के विभिन्न देश एक-दूसरे के निकट आ गये है।

राष्ट्रों की पारस्परिक निर्भरता :- वर्तमान समय में राष्ट्रीयता का युग समाप्त हो गया है आज विश्व अति तीव्रता से गतिशील है वह देश जो जरा सा भी आलस्य करेगा वह अन्य देशों की तुलना में पिछड़ जायगा।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना / समझ के विकास का एक मात्र साधन शिक्षा - Education is the only means of Improving International Harmony / understanding

1 बालकों में एक-दूसरे के प्रति विश्वास उत्पन्न किया जाय तथा उन्हें यह बताया जाए कि विश्वभर के नागरिक उसके लिए हैं अतः उसे उनके प्रति सद्भावना रखनी चाहिए।

2 छात्रों को विभिन्न विषयों को पढ़ते समय हमें उन स्थलों पर जोर देना चाहिए जो अन्तर्राष्ट्रीय भावना को पोषक हो

(3) बालकों को शिक्षा ऐसी हो जिसमें उन्हें सोच-विचार करने की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हो इस प्रकार हम कह सकते हैं, कि शिक्षालय आस-पास की संस्कृति में निहित सर्वोत्तम तत्वों को व्यक्त कर सकते हैं तथा करते भी हैं

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

AKHILESH YADAV
(B.Ed. M.Ed B.H.U)